कजाखिस्तान की सीनेट के चेयरमैन श्री कास्सिम-जोमार्ट टोकायेव के साथ 7 अप्रैल, 2008 को शिष्टमंडल स्तरीय वार्ता के पश्चात् भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मोहम्मद हामिद अंसारी का प्रेस वक्तव्य

7 अप्रैल, 2008
अस्ताना, कजाखिस्तान।

मैं कजाखिस्तान और इस गतिशील शहर अस्ताना में आकर प्रसन्न हूं। अस्ताना की मेरी पहली छाप विस्मयकारी रही है; इस शहर ने अत्यंत थोड़े समय में ही विकास की बुलंदियों को प्राप्त कर लिया है। हम कजाखिस्तान द्वारा 1991 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में प्राप्त की गई महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए इसकी प्रशंसा करते हैं।

भारत में हम मध्य एशियाई क्षेत्र को अपना विस्तारित पड़ोस मानते हैं। हमारे लोग परस्पर जिस गर्मजोशी का अहसास करते हैं वह हमारे स्वागत में झलकी है। सीनेट के चेयरमैन महामहिम श्री कास्सिम जे.टोकायेव और उनके शिष्टमंडल के साथ हमारी लाभप्रद बातचीत में भी इसका उल्लेख किया गया। हमारी चर्चाएं रचनात्मक और लाभदायक रहीं और इनमें अनेक द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे शामिल थे। पारस्परिक हित के मुद्दों पर विचारों का मेल उत्साहवर्धक है।

भारत और कजाखिस्तान के बीच संबंध परंपरागत रूप से दृढ़, मित्रवत् और बहु-आयामी रहे हैं। ये 1991 में कजाखिस्तान की स्वतंत्रता के बाद से ही लगातार बढ़ रहे हैं और यह अत्यंत संतोष का विषय है। हम महामहिम राष्ट्रपति की भारत यात्रा को प्रेमपूर्वक याद करते हैं हम कजाखिस्तान द्वारा भारत के प्रति दशाई गई मित्रता और विश्वास को महत्व देते हैं और इन भावनाओं का पूर्णत: परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। हम निकट भविष्य में अधिक गतिशील और पारस्परिक लाभकारी संबंध के प्रति आश्वस्त हैं।

आज की वार्ता में मैंने राष्ट्रपति नाज़रबायेव की पहल, सी आई सी ए की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए भारत के समर्थन को दोहराया है। यह एक संगठन बन गया है जो वर्तमान चुनौतियों एवं मुद्दों के अनुकूल है। मैने राष्ट्रपति नाज़रबायेव की 2009 में 'कांग्रेस ऑफ

लीडर्स ऑफ वर्ल्ड एंड ट्रेडिश्नल रिलीजन्स' आयोजित करने की पहल पर भी अपनी प्रशंसा व्यक्त की है।

हम 2010 में यूरोप में सुरक्षा और सहयोग के संगठन का अध्यक्ष चुने जाने पर कजाखिस्तान को बधाई देते हैं। यह कजाखिस्तान की अंतरराष्ट्रीय मामलों में बढ़ते हुए दर्जे का प्रतिबिंब है।

हमारे दोनों देशों के बीच 2007 में लगभग 200 मिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार रहा। हमने द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने के साधनों और विशेषकर हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में आर्थिक सहयोग के क्षेत्रों का विस्तार करने पर चर्चाएं कीं। आर्थिक, वाणिज्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अपने सहयोग बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं।

हमने द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने में संसदों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की और इस बात पर सहमत हुए कि और अधिक संपर्क और यात्राएं होनी चाहिए कजाखिस्तान और भारत की संसदों के बीच अधिक पारस्परिक बातचीत हमारे संबंध को और सुदृढ़ और गहन बनाएगी।

मैंने चेयरमैन टोकायेव को परस्पर सुविधाजनक समय पर भारत आने का निमंत्रण दे दिया है। हम निकट भविष्य में महामहिम राष्ट्रपति नाज़रबायेव की भारत यात्रा का भी उत्सुकता से इंतजार कर रहे हैं।

मैं अपने अगले तय कार्यक्रम, सीनेट के माननीय सदस्यों को सम्बोधित करना अपना सौभाग्य समझता हूँ।

मैं अस्ताना में लोक प्रशासन अकादमी और अल्माटी में अल-फराबी-कजाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में जा रहा हूँ। मैं अपनी यात्रा के दौरान महामहिम राष्ट्रपति नाज़रबायेव और प्रधानमंत्री मास्सीमोव से मिलूंगा। मुझे कोई संदेह नहीं है कि हमारी चर्चाएं लाभप्रद और उपयोगी होंगी तथा हमारे देशों और लोगों के बीच संबंधों को सुदृढ़ बनाने में और सहयोग करेंगी।

धन्यवाद।